

तारीख हुसूस	हुसूस या कार्यवाही मय इतिहासियल्य जज	अदालत की खसूस
20.08.2025	<p>पञ्जावली के अधिवक्ता उप / अनु / पीठासीन अधिकारी दिग्व प्रशासनिक कार्या में व्यस्त है। पत्रावली वास. <u>पत्रावली</u> दिनांक <u>16/10/2024</u> को पेश है।</p> <p>16/10/2024 पत्रावली पेश हुई। प्रार्थनी अधिवक्ता उपस्थित। विप्रार्थी एकपक्षीय। प्रार्थनी अधिवक्ता की बहस सुनी गई। दौरान बहस निवेदन किया कि प्रार्थनी की ओर से विवादित आराजी के संबद्ध में चाद अन्तर्गत धारा 88,53,188 आर.टी.एक्ट के तहत पेश किया गया है,जिसमें प्रार्थनी को सफलता मिलने की संभावना है। प्रार्थनी की पुश्तैनी भूमि ग्राम नवातला तहसील पचपदरा वर्तमान तहसील पाटोदी व जिला बालोतरा की खसरा संख्या 1897/708 व 1899/708 कुल रकबा 82.07 बीघा भूमि अवस्थित है, जो कि मुतवफ़ी मगनाराम पुत्र जीयाराम के नाम खातेदारी में इन्द्राज थी। प्रार्थनी मगनाराम की जायन्दा पुत्रिया है। मगनाराम के फौत होने पर फौतदगी नामान्तरण प्रतिवादी के नाम दर्ज किया गया तथा प्रार्थनी को उनके हक हकूको से महरूम रखा गया, जबकि प्रार्थनी मगनाराम की प्रथम श्रेणी की विधिक वारिसान होने के कारण उनके नाम भी नामान्तरण में दायर किए जाना चाहिए था, लेकिन विप्रार्थी द्वारा जानबूझकर प्रार्थनी का नाम दायर नहीं करवाया। विप्रार्थी राजस्व रिकॉर्ड में गलत प्रविष्टि का नाजायज फायदा उठाते हुए विवादित आराजी को बेचान करने एवं मौका स्थिति फेरबदल करने पर उत्तारू है। यदि स्थगन आदेश जारी नहीं किया गया, तो प्रार्थनी को क्षति होगी। अतः प्रार्थनी के पक्ष में विप्रार्थी के विरुद्ध स्थगन आदेश पारित किया जावे कि विवादित आराजी की राजस्व रिकॉर्ड एवं मौका स्थिति की यथास्थिति बनाए रखें।</p> <p>हमने प्रार्थनी अधिवक्ता की बहस सुनी। बहस पर मनन किया तथा पत्रावली पर उपलब्ध राजस्व रिकॉर्ड एवं संलग्न दस्तावेजात का गम्भीरतापूर्वक अवलोकन किया। जिसमें पाया कि ग्राम नवातला तहसील पचपदरा वर्तमान तहसील पाटोदी व जिला बालोतरा की खसरा संख्या 1897/708 व 1899/708 कुल रकबा 82.07 बीघा भूमि विप्रार्थी की खातेदारी में अवस्थित है। प्रार्थनी की ओर से विवादित आराजी में खातेदारी घोषित करवाने</p>	

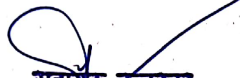
सहायक क्लर्क
(S.D.O.) बालोतरा



व बाद बंटवाडा करवाने का वाछित अनुतोष चाहा गया है, जो कि मूलवाद में साक्ष्य सबूतो के आधार पर तय होगा कि प्रार्थनी राहत प्राप्त करने की हकदार है अथवा नहीं। लेकिन प्रथम द्वष्यता मामला व सुविधा का संतुलन प्रार्थनी के पक्ष में नहीं बनता है तथा अपूरणीय क्षति का बिन्दु भी प्रार्थनी के पक्ष में नहीं बनता है, क्योंकि प्रार्थनी विवादिता आराजी की खातेदारी धोषित करवाने की इरतदुआ चाही गई है, जबकि विप्रार्थी विवादित आराजी के रिकार्डेड सहखातेदार है, यदि रथगन आदेश पारित किया जाता है, तो विप्रार्थी को अपूरणीय क्षति होनी की संभावना बनती है। उपरोक्त विवेचन के उपरांत न्यायालय हाजा इस नतीजे पर पहुंचा है कि प्रथम द्वष्यता मामला, सुविधा का संतुलन एवं अपूरणीय क्षति तीनों ही बिन्दु प्रार्थनी के पक्ष में नहीं बनते है।

लिहाजा प्रार्थनी का आवेदन अन्तर्गत धारा 212 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के तहत साबित नहीं होने के कारण खारिज किया जाता है।

पत्रावली फ़ैसल सुमार होकर नम्बर से कम होकर दाखिल दफतर हो।


सहायक कलक्टर
(S.D.O.) बालोतरा